सहयोगी रचनाकार

Inkalab Publication , R.P Residency (R.P Homes), B wings, Flat No. 506, Desale Pada, Gajanan Patil Chowk, Nandivli, Dombivli (East), Pin Code- 421201 (Maharashtra)

website-www.inkalabpublication.com

ISBN 978-81-967088-5-6
9 788196 708856

MRP: 199

available on :

amazon

Flipkart

नारी शक्ति की उड़ान (साझा काव्य संग्रह) संपादिका - पारुल निरंजन इंकलाब पब्लिकेशन

नारी शक्ति की उड़ान

(साझा काव्य संग्रह)

INKALAB PUBLICATION
Pride of Indian Literature
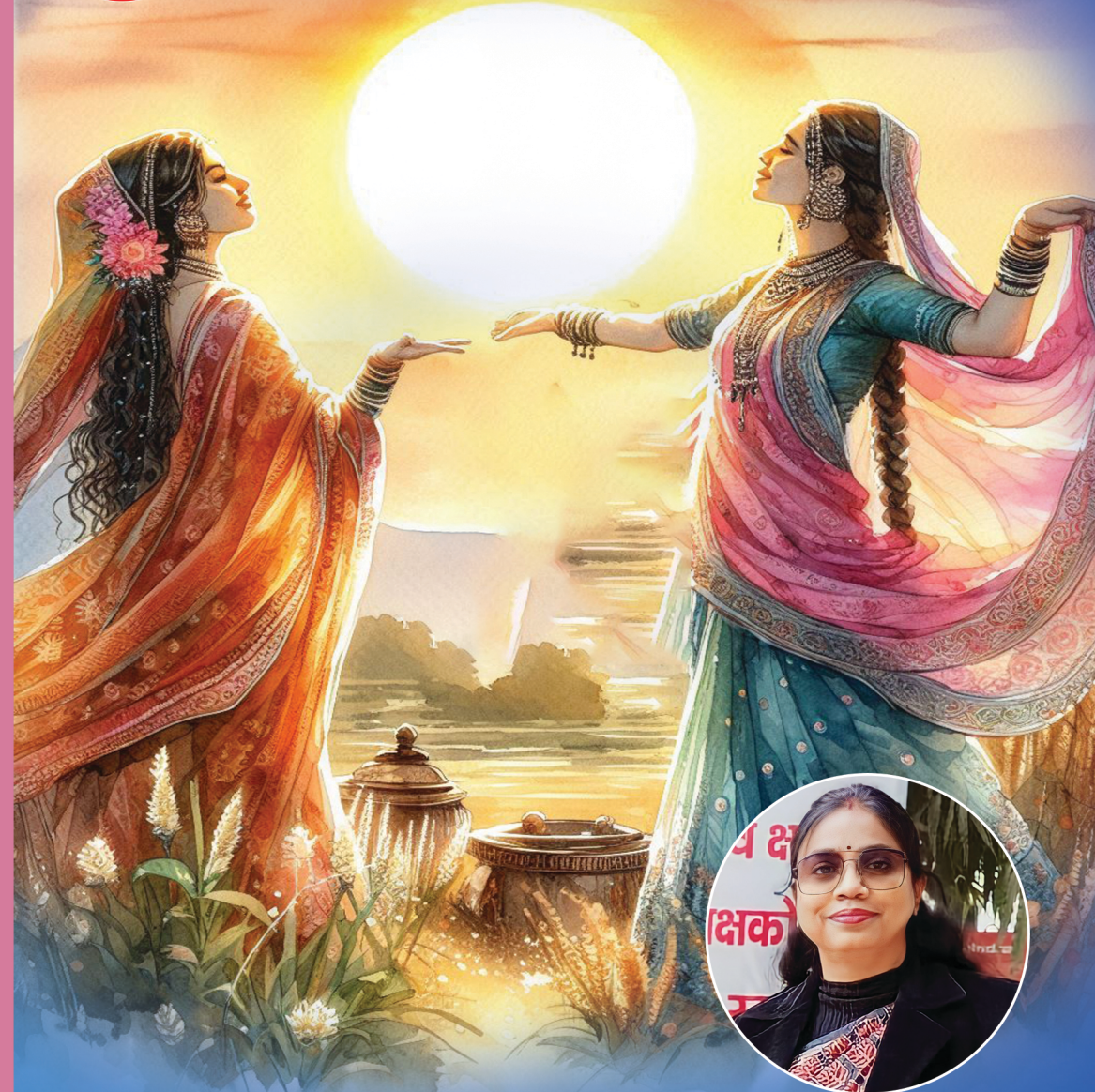
संपादिका - पारुल निरंजन

नारी शक्ति की उड़ान

(साझा काव्य संग्रह)

संपादिका

पारुल निरंजन

AN ISO 9001: 2015 Certified

इंकलाब पब्लिकेशन

नारी शक्ति की उड़ान (साझा काव्य संग्रह)
संपादिका - पारुल निरंजन
प्रकाशक – इंकलाब पब्लिकेशन
पता - इंकलाब पब्लिकेशन, आर .पी. रेजिडेंसी, गजानन पाटिल चौक,
डोंबिवली (ईस्ट), थाने, महाराष्ट्र , भारत ,पिन – 421201
दूरभाष – 9819273616
ई - मेल : mail@inkalabpublication.com
info@inkalabpublication.com
वेबसाईट : www.inkalabpublication.com

मुद्रक - खुशबू प्रिंटर्स , आर .पी. रेजिडेंसी, गजानन पाटिल चौक,
डोंबिवली (ईस्ट), थाने, महाराष्ट्र , भारत ,पिन – 421201

प्रथम संस्करण : अगस्त 2024
ISBN: 978-81-967088-5-6
मूल्य : 199 रुपए मात्र।

© सर्वाधिकार सुरक्षित
लेखक और प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी अंश को पुनरुत्पादित, प्रतिलिपित नहीं किया जा सकता। किसी प्राप्य प्रणाली में संग्रहित नहीं किया जा सकता अथवा अन्य किसी भी प्रकार से चाहे इलेक्ट्रॉनिक, मेंकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकार्डिंग से संचित नहीं किया जा सकता। इस शर्त का भंग करने वाले पर उचित कानूनी कार्यवाही की जाएगी।किसी भी प्रकार का न्यायिक क्षेत्र मुंबई , महाराष्ट्र होगा।
विशेष सूचना:- इस पुस्तक को त्रुटिरहित प्रकाशित करने का पूरा प्रयास किया गया है यदि फिर भी कहीं कोई त्रुटि पायी जाती है तो इसके लिए प्रकाशक जिम्मेदार नहीं है। रचनाओं की मौलिकता एवं रचनाओं में त्रुटि के लिए रचनाकार स्वयं जिम्मेदार होंगे। रचनाकारों के विचारों से प्रकाशक एवं संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

संपादकीय

सर्वप्रथम मैं आप सभी पाठक गणों का अभिवादन कर नारी शक्ति की उड़ान साँझा काव्य संग्रह पर सूक्ष्म प्रकाश डालना चाहती हूं, जैसा कि इस काव्य संग्रह के नाम से स्पष्ट हो जाता है कि इसमें वर्तमान मे सशक्त होती नारी की भूमिका और समाज मे नारी को लेकर चल रही भांति भांति की अभिमन्त्रणाओ को लेकर सभी कवियों ने अपने अपने हृदय उदगार परिलक्षित किए हैं।इस साँझा काव्य संग्रह मे देश के विभिन्न कोनो से आये जाने माने कवि जो अपनी लेखनी का यश कई रचनाओं और कृतियों के माध्यम से निरंतर फैला रहे हैं, ऐसे विद्वान जनों की रचनाओं से ये साझा काव्य संग्रह सुशोभित है।नारी समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है। नारी बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती।भारतीय संस्कृति में नारी के सम्मान को बहुत महत्व दिया गया है। संस्कृत में एक श्लोक है- 'यस्य पूज्यंते नार्यस्तु तत्र रमन्ते देवता:। अर्थात्, जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। सशक्तिकरण को लेकर विभिन्न प्रयास किये जा रहे हैं जिनका परिणाम यह है कि आज नारी मुखर होकर हर कार्य क्षेत्र में कंधे से कन्धा मिलाकर आगे बढ़ रही है।नारी शक्ति की उड़ान साँझा काव्य संग्रह में शामिल रचनाकारों ने अपनी लेखनी के प्रति समर्पण शीलता और रचनात्मकता

के द्वारा नारी शक्ति को लेकर बहुत ही सुंदर कविताओं का संग्रह इसमें प्रस्तुत किया है।अंत में मैं अपने प्रस्तुत साँझा काव्य संकलन नारी शक्ति की उड़ान में सम्मिलित सभी प्रतिभाशाली रचनाकारों का हृदय तल की गहराइयों से हार्दिक अभिनंदन करते हुए उनका आभार व्यक्त करती हूं कि उन्होंने अपनी उत्कृष्ट काव्य रचनाओं को हमें प्रेषित कर हमारे काव्य संकलन को गौरव प्रदान किया है मुझे पूर्ण विश्वास है प्रस्तुत साँझा काव्य संकलन नारी शक्ति की उड़ान साहित्य के क्षेत्र में निश्चित रूप से अपनी एक नई पहचान बनाएगी और अंत में मैं एक पंक्ति में इस बात को कहना चाहूंगी कि सभी प्रतिभाशाली रचनाकारों से जो मधुर संबंध बने वह मुझे अवश्य ही नहीं सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करते हैं।

- पारुल निरंजन

सहयोगी रचनाकार

संपादिका परिचय

नाम - पारुल निरंजन
जन्मतिथि - 04/11/1983
जन्मस्थान - उरई (जालौन)
माता / पिता का नाम : शशि बाला - मोहन सिंह
पति का नाम : महेंद्र सचान
बेटियां : इशिका सचान और इरा सचान
शिक्षा - परा स्नातक (रासायन विज्ञान), बी.एड., विशिष्ट बीटीसी -2007
कार्य - अध्यापिका (बेसिक शिक्षा परिषद)
प्रकाशन - विभिन्न पत्र पत्रिकाओं एवं साझा संकलन में निरंतर रचनाएँ प्रकाशित।
पता - माधवपुरम आई आई टी सोसाइटी कानपुर
संपर्क सूत्र - 9696534380

सशक्त हैं हम

क्या हुआ बेटी हूं
क्या हुआ नारी हूं
मेरे भी कुछ सपने हैं
फिर क्यों मैं अब तक बेचारी हूं
मुझे भी छूना है मुट्ठी भर आसमान
जहां बिना रोक टोक के
मैं अपने पंख फैला कर उड़ सकूं....
मुझे भी पाना है वह मंजिल......
जिसे मेरे लिए असंभव समझा जाता है.....
मेरा भी मन है मेरे भी सपने हैं.....
अब नहीं रहना मुझे रूढ़िवादी पिंजरे में.....
जो कहते हैं घर का काम सीखो......
घर में रहो, घर सम्हालो....
घर की इज्जत का ख्याल रखो.....
यह सब नहीं केवल मेरी जिम्मेदारी....
पुरुष से भी कोई क्यों नहीं कहता.....
पुरुष को इज्जत का हवाला क्यों नहीं देता....
हर बंदिश हर बंधन सिर्फ नारी पर ही क्यों.....
नहीं रहना है बंदिश में.....
नहीं सुनना है किसी की थोपी बातों को....
अब मैं भी उड़ना चाहती हूं....
स्वच्छन्द गगन को छूना चाहती हूं.....
अपने सपने पूरे कर में भी दुनिया को दिखाना चाहती हूं....

कि मैं भी वो शक्ति हूं......
घर भी संभाल सकती हूं.....
और वक्त पड़े तो फाइटर प्लेन भी उड़ा सकती हूं....
ना समझो मुझे किसी से कम.....
अब अबला नहीं सशक्त हैं हम.....

*****

नारी उड़ान

जब बंदिश से आज़ाद हुई....
तो क्यों दुनिया नाराज़ हुई....
कहने को देते हो समता का अधिकार....
फिर मन में क्यों रखते हो प्रतिकार.....
अब मैंने भी जीना सीखा है...
मर्यादा में रहकर के हर काम में बढ़ना सीखा है.....
अब कितना भी मुझको रोको....
कितना भी मुझको टोको....
मैं ना हूँ अब रुकने वाली....
ये शक्ति वाहिनी अब निकल पड़ी....
सपने सारे पूरे कर जाएगी....
बेटी है तो क्या हुआ...?
अपना परचम फहराएगी....
अब ना कोई मुझको बोझ कहे......
अब ना कोई मेरा शोक करे.....
मैं वो वो कर दिखलाऊंगी....
समाज की सोच बदलकर जाउंगी.....
बेटी हूं .... कर सकती हूं ...
हाँ बेटी भी सब कर सकती है.....
हाँ बेटी ही तो कर सकती है......

*****

सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यंबके गौरी नारायणि नमोस्तुते॥

शिवनाथ (शिवा गौतम)

जन्मतिथि:04/12/1981

जन्म स्थान: कानपुर नगर

माता -पिता:श्रीमती विद्यावती _श्री मातादीन

शिक्षा : परास्नातक (अर्थशास्त्र), बी०एड०, विशिष्ट बी० टी० सी० 2010

कार्य :अध्यापक (बेसिक शिक्षा परिषद)

पता : आराजी 8, आईआईटी सोसाइटी कानपुर नगर 208016

सम्पर्क सूत्र :9956233251

सशक्त नारी

नारी को अबला कह कहके नारी को है भरमाया
वक्त बेवक्त नारी को है ....सबने खूब आज़माया
नारी की गाथा पर तो ...इतिहास भी है इठलाया
जल थल वायु ,कहां ना उसने परचम है लहराया

विद्वता का लोहा मनवायी ..गार्गी अपाला मैत्रयी
रणभूमि में गोरों को .... ..ललकारती लक्ष्मीबाई
कुशल नेतृत्व कर दिखायीं ....इन्दिरा प्रियदर्शनी
साहित्य को रोशन करतीं ..सुभद्रा और महादेवी

त्याग, दया, ममता की तो ......प्रतिमूर्ती है नारी
अनाथों संग ज़िन्दगी गुजारी ...मदर टेरेसा सारी
किरण बेदी ने खूब निभायी ...अपनी ज़िम्मेदारी
कल्पना ,सुनीता की कहानी ..भी सबने है जानी

सशक्त नारी की कहानी... हम बार बार दोहरायें
एक दिन क्यूँ रोज रोज हम उनके गुण ना गायें ?
असहाय असक्त अबला नारी.,बन्द करो ये गाना
हर क्षेत्र में नारी का है ....लोहा सबने माना !!

*****

नारी भी इंसान है

आँखों से अश्रु बहाते....बेबसी की गठरी
मौन साधे जीवन जिये.....जैसे गूंगी ,बहरी
चुपचाप हर काम करे.....कभी नही है थकती
रोग, पीड़ा,ज्वर में....उफ्फ कभी नही करती
सहनशीलता का रूप यही....अहिल्या,सीता,और सती
युग बदला,सब बदले....पर नारी वहीं की वहीं
बोल पड़े गर एक शब्द तो....भूचाल यहाँ मच जाता है
कितनी भी प्रतिभावान रहे....पर हर पल ताना मारा जाता है
घर घर की ही यही कहानी....परम्पराओं के नाम पर
बेड़ियों से जकड़ा जाता है
जन्म लिए वो घर छूटा....ससुराल कहाँ अपना पाता है
कुछ शुद्ध विचारो के मिल जाये....अक्सर चूल्हे में तपाया जाता है
कुछ हवनकुण्ड से भस्म हुए....कुछ को तिल तिल कर मारा जाता है
शब्दभेदी जब बाण चले....हृदय तार तार हो जाता है
कितनी भी डिग्रियां पास हो उनको....उन्हें तुच्छ ही समझा जाता है
ढल जाती है हर परिस्तिथि में....नारी जन्म जो पाया है
पर आत्मसम्मान को चोट लगे तो....काल भी थर्राता है
असीम शक्ति शक्तिरूपनी....खुद से ही अनभिज्ञ रहती है
सेवा करने का ही गुन....जो रगों में प्रवाहित रहती है
आ जाये जब खुद पर वो....धरती वही फटती है
या यज्ञ कुंड की अग्नि में....खुद को समाहित करती है
बिगुल बजाए गर विरोध का....तो तन्हाई क्यो सहती है
कमजोर नही संस्कारी है... फिर क्यो अत्याचार सहती है

सिद्ध हो गया अब तो.... पेड़ पत्तो में भी जान है
जीती जागती नारी से... फिर क्यो सब अंजान है
सोच सभी अब अपनी बदलो... नारी भी इंसान है
नारी भी इंसान है।

*****

रचनाकार परिचय

दिव्या त्रिपाठी

जन्मतिथि:१०/०३/१९८३

जन्मस्थान: रायबरेली (उ. प्र)

माता - श्रीमती इंदु त्रिपाठी

पिता: श्री अरुण कुमार त्रिपाठी

पति: डॉ असित बाजपाई

शिक्षा : एम. ए. हिंदी , बी. एड., यू जी सी नेट (हिंदी)

कार्य : अध्यापिका

पता : आई आई टी कानपुर २०८०१६

सम्पर्क सूत्र : 7376690947

मेरी चिड़िया

आज फिर एक नन्ही चिड़िया ने जन्म लिया
मैंने उसको खुले नभ में छोड़ दिया
ऐसे ही नही छोड़ा था, किसी नियम को नहीं तोड़ा था
दी थी मैंने बहुत सी सीख, सोचा था लेगी वो दुनिया जीत।
ढल रहा था दिन, घुट रहा था दम
कहां होगी मेरी चिड़िया, दुनिया इतनी नही है बढ़िया
छोड़ सकूं उसको स्वच्छंद, हृदय से आ रही आवाज मंद
क्या ऐसे ही होगा विकास, जिसकी है हर दिल को आस
पा ही जायेगी वह अपना घोंसला
क्या है आज इतना हौसला?
मुश्किल लगता है यह काम, चिड़िया नही वह है इंसान
कैसे पता लगाएगी वह,पास है मानुष या शैतान।
उम्मीद खो रही सुरक्षा की, आस बची है आत्मरक्षा की।
बदलने वाला नहीं कुछ, मात्र नारों से।
पूछो उन किस्मत के मारो से।।
कुछ नही होगा बनाने से कानून
लाना होगा मन में सच्चा जुनून
डरी हुई है वो बेचारी अपनी आवाज उठाने से
देखो सहम गई है कैसे, कहीं गुहार लगाने से
आना चाहिए यही भय उन निर्भय शैतानों में
लूट ली है अस्मिता जिन क्रूर हैवानों ने
हमको तुमको सबको बनना होगा उसकी आवाज
तभी बदल सकेगा देखो आने वाला कल और आज।।

बेटी

बेटी हूं , बेटी सी रहना चाहती हूं
बस अपने मन की कहना चाहती हूं।
अपनी सी कहने में ,झिझकना न पड़े
मैं खुद लड़ूं न कि कोई मेरे लिए लड़े
हां मैं कल्पना की उड़ान भरना चाहती हूं
मैं अपने खुद के ही सपनों में रंग भरना चाहती हूं।
हां मैं धारा के विपरीत बहना जानती हूं
हर एक बात न चुपचाप सहना चाहती हूं।
मैं क्या हूं, क्या हो सकती हूं
ये निर्णय स्वयं पर ही छोड़ना चाहती हूं
हां मैं भी माता - पिता का नाम रौशन करना चाहती हूं
पर बेटों सी नही, बेटी ही बनकर चमकना चाहती हूं।
रूढ़ियों को नकारना व मूल्यों को समझना चाहती हूं।
हां मैं अपनी नजर से सबको परखना जानती हूं।
मेरी आस्था- विश्वास , मैं खुद ही जनना चाहती हूं
हां मैं बेटी हूं ,बेटी ही रहना चाहती हूं।
हां मैं ममता के आंचल सी बिखरना चाहती हूं
पर सिंहनी सी मां भी बनना जानती हूं।
हां मन मेरा शीतल भी है,कोमल भी है, पावन भी है
आ पड़े तो दुर्गा रूप धरना जानती हूं।
हां मैं बेटी हूं, बेटी सी रहना चाहती हूं
बस अपने मन की कहना चाहती हूं।।

*****

रचनाकार परिचय

ब्रह्मानंद गुप्ता 'ब्रह्मपाद'

ब्रह्मानंद गुप्ता ब्रह्मपाद का जन्म करौली जिले के हिंडौन सिटी कस्बे (राजस्थान) में 1 जुलाई 1966 को हुआ है। आप राजस्थान सरकार के पशुपालन विभाग में कार्यरत हैं ।इन्होंने बेरोजगार ,युवाओं की समस्याओं ,आकांक्षाओं को समझा है । ग्रामीण अंचल में दलितों आदिवासियों, पिछड़े दलित मध्य काम किया है। इन्होंने बेरोजगार, युवाओं की समस्याओं शोषित दलित वर्ग तथा मानवीय संवेदनाओं के प्रतिनिधि कवि हैं आपकी रचनाएं विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं सोशल मीडिया पर विभिन्न ग्रुपों जैसे हंस पत्रिका, का बागर्थ , शब्दआलय हिंदी कवि साहित्य संगम इलाहाबाद में उनकी कविताएं निरंतर प्रकाशित होती रहती हैं। निरंतर प्रकाशित होती रहती हैं। उलझन की पगडंडिया इनका प्रथम काव्य संग्रह है।

पता - ब्रह्मानंद गुप्ता ब्रह्मपाद, पशुधन प्रसार अधिकारी
नूपुर सदन, ट्रांसफार्मर के पास,जैन मंदिर रोड
मोहन नगर हिंडौन सिटी , जिला करौली राजस्थान।
संपर्क सूत्र - +91-94138814
ई-मेल - bngupta1966@gmail.com

डॉ o पूनम

मेरे जन्म पर परिवार में,
मातम पसरा था।
परिवार में निराशा हुई ,
घर में तीसरी लड़की पैदा हुई ,
मैं पूनम को पैदा हुई ,
पर घर परिवार में के लिए ,
काली मावस था मैं और मेरा जन्म।

मां मुझे उसी शिद्दत से ,
सीने से लगाए हुए,
आंचल में छुपाए हुए थी।
पापा बार-बार आते देखने,
मुझ पर हाथ फेरते ।
धीरे-धीरे मेरा,
पालन पोषण शुरू हुआ ।
जैसे मेरी दो बड़ी बहनों का ।
एक ही कपड़े के थान से ,
तीनों बहनों की फिराक,
मां सिलती।

घर पर अधिकतर ,
छाछ वाला दलिया ही बनता था।

हम तीनों बहिनों की,
अलग-अलग खाने,
की थी प्यालियां।
कपड़े की गुड़िया बनाते ,
उनकी आपस में शादी कराते।

मां मेरी बहनों की तरह मुझे भी,
मसरकारी स्कूल में डाला गया।
दिन निकलते गए न जाने कब ,
दसवीं बोर्ड का रिजल्ट आ गया,
मेरी राज्य में चौथी मेरिट लगी थी।
घर पर लोगों का,
बधाई देने वालों का ,
प्रेस मीडिया वालों का ,
तांता लग गया,
मुझे सामाजिक संगठनों,
एनजीओ द्वारा नवाजा गया।

समय अंतराल बाद ,
मैं सीनियर के साथ,
मेडिकल प्रवेश परीक्षा,
उत्तीर्ण कर गई।
मेडिकल कॉलेज से,
बच्चों की डॉक्टर बनकर ,
बाहर निकली,

जिले के अस्पताल में,
मुझे पहली पहली बार,
तैनात किया गया।

गरीब अमीर बच्चों का ,
इलाज कर रही हूं,
मां-बाप तो नहीं है।
पर बड़ा अच्छा लगता है,
जब मेरे परिवार,
कुटुंब ,के समाज के लोगकहते हैं।
सरजू की बेटी है,
हमारे सरजू की,
और फक्र करते हैं मेरे पापा पर,
जो लोग कभी ,
मेरे जन्म पर,
मानते थे मातम।

*****

मैं वस्तु नहीं

आज मम्मी सुबह से ही,
काम पर लगी हैं।
ड्राइंगरूम   के पर्दे,
करीने से लगाये,
बदले सोफा के कवर ।
घर में सभी बेड़ों की,
बदली चादरें।
बेतरतीव गुलदस्तों   को,
सजाया ताजा फ़ूलों से।
मुझे मिले तमगों,
डिग्रीयों को,
डिस्प्ले पर रखा।

मुझे बताया गया कि,
आज मुझे देखने वाले ,
आने वाले हैं।
पापा मोबाइल पर बार-बार,
कॉल लगाने में व्यस्त, चिंतातुर्।
मम्मी ने मुझे कुछ,
प्रश्नों के सकरात्मक,
उत्तर देने का दिया प्रशिक्षण।
कुछ पकवान मम्मी ने,
बनाए घर पर रसोई में ,

शेष को पापा लाये,
बाजार से ,
मुझे अच्छे से तैयार किया गया।
ब्यूटी पार्लर वाली मैम को ,
घर बुलाकर।

उनके आने पर पापा मम्मी,
उन्हें आदर पूर्वक बैठक तक लाए।
वे तीन आदमी ,
एक महिला दो पुरुष ,
स्वागत सत्कार, चाय नाश्ते के बाद ,
मुझे उनके सामने बुलाया गया।
मैं जीवन का साक्षात्कार,
परीक्षा के लिए थी तैयार,

उनका व्यवहार मेरे साथ था ,
इंटरव्यू बोर्ड के सदस्यों की तरह ,
पहला सवाल महिला ने दागा,
जो मेरे वजूद को चुनौती था।
अगले सवाल मेरी क्वालिफिकेशन
जॉब चार्ट सैलरी से संबंधित।
कभी मुझे हेयदृष्टि से ,
कभी परिवार को ,
कभी रंग को लेकर,
कभी हाईट को लेकर उनमें थे।

मेरे तमगा और डिग्रियां,
मूल्यहीन निरर्थक थी।
उनका कोई मोल नहीं।
जिन तमागों , डिग्रियों पर ,
मेरा परिवार इतराता था।
कितने बेजान खोखले है।
आज मुझे लगा ,
डिग्री और तमगों में भी ,
होता है लिंगभेद।
मुझे ऐसे लगा,
जीवन के सभी कमियां ,
मुझ में थी ,

मैं वस्तु नहीं हूं ,
जो मुझे पैमानों, तुलाओं,
पर नापा तौला , जा रहा था।
मेरी इच्छाएं ,भावनाएं।
मेरी खुद की है।
मैं वस्तु नहीं,
मेरी भी पसंद ना पसंद है।

*****

रचनाकार परिचय

प्रतिभा रानी भारती

जन्मतिथि: 25 मार्च 1981
शिक्षा: एमए शिक्षाशास्त्र, इतिहास, b.ed ,विशिष्ट बीटीसी

पद- सहायक अध्यापिका
वर्तमान पता- जे- 14 मॉडल टाउन ,कंकरखेड़ा ,मेरठ
मोबाइल न. 9997140625
रुचि- पेंटिंग , क्राफ्ट, पॉट पेंटिंग, कविता व कहानी लेखन
अनुभव- 13 साल 6 महीने
उपलब्धियां:- कला, क्राफ्ट और पपेट्स में राज्य स्तरीय प्रतियोगिता जितना , खंड शिक्षा अधिकारी बागपत,मेरठ जिले द्वारा सम्मानित , कई संस्थाओं के द्वारा सम्मानित ,कई पुस्तकों में कविता ,कहानी छपना, कक्षा में बच्चों को नए-नए टी .एल .एम के माध्यम से पढाना।

नारी तू वंदनीय है

नारी तू वंदनीय है ,नारी तू वंदनीय है।
तेरा ईश्वर ने रूप धरा है ,इस धरा के लिए।
तू ही तो समायी है।
हर रूप में,
तू वनिता है, तू जननी है, तू ही तो शक्ति है।
तू साथ देती भार्या है, तो कहीं ज्वाला बखेरती वीरांगना है।
नारी तू वंदनीय है ,नारी तू वंदनीय है।

तूने ही तो इस धरा को सींचा है।
जब ही तो पल्लवित हुए वीर, महारथी।
तूने ही तो घर देश आन- बान के लिए किया है बलिदान।
तेरी ही वीरता त्याग से रचा है यह इतिहास।
नारी तू वंदनीय है, नारी तू वंदनीय है।

रही संसार से विरक्त सदा और दी कठिन अग्नि परीक्षा।
तू ही तो वैदही ही है ,जिसने बलिदान की अपनी सारी खुशियां।
नारी तू वंदनीय है ,नारी तो वंदनीय है।

खींच घोड़े की लगाम, संग ले अपनी संतान।
थाम हाथ में तलवार ,कर दिया फिरंगियों को बदहाल।
तू ही तो झांसी की वीरांगना लक्ष्मीबाई है ।
जिसने जगा दिया था ,आजादी की ज्वाला को।
नारी तू वंदनीय है, नारी तू वंदनीय है।

उछाली लोगों ने कीचड़ और खाई सबकी गालियां।
शिक्षा के पथ से कोई ना उसे डगमगा सका।
बनी पहली महिला अध्यापिका।
तू ही तो है, सावित्रीबाई फुले , जो कर गई
बालिकाओं के जीवन में उजियारा।
नारी तू वंदनीय है ,नारी तू वंदनीय है।

*****

हूं मैं तुम्हारी तनुजा

हूं मैं तुम्हारी तनुजा, हूं मैं तुम्हारी प्रतिच्छाया।
तुमसे ही है मेरा रूप योवन ,तुमसे ही है मेरी काया।
तुम हो तो मेरी दुनिया भरी है, तुम नहीं तो निस्सार सारी है।
तुम ही तो हो,हां !तुम ही तो हो धात्री मेरी,
तुमने ही तो बसाया यह संसार मेरा।
हूं मैं तुम्हारी तनुजा, हूं मैं तुम्हारी प्रतिच्छाया।

तुमसे ही जुड़ा अंत कारण मेरा,
तुमसे ही बना यह स्वरूप मेरा।
तुम हो तो त्रास नहीं लगता मुझे
और मिल जाता है, प्रयोजन मेरा।
तुम ही तो हो ,हां !तुम ही तो हो, जननी मेरी।
तुमने ही तो सींचा है, यह तरु मेरा।
हूं मैं तुम्हारी तनुजा, हूं मैं तुम्हारी प्रतिच्छाया।
तुम्हारे आंचल और स्नेह से ढका है, यह पल्लव मेरा।
तुम ही तो हो विधाता मेरा,
तुमसे ही बन जाता तनया तरु मेरा।
तुम ही तो हो,हां! तुम ही तो हो,
मां मेरी, जिसने दिखाया प्रथम सवेरा मेरा।
हूं मैं तुम्हारी तनुजा, हूं मैं तुम्हारी प्रतिच्छाया।

*****
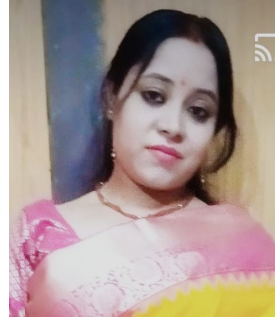
प्रज्ञा अमृत

स्थान: गोरखपुर
शैक्षिक योग्यता :
बी.कॉम,टैली स्नातक,एम. सी.ए.(लेवल कोर्स),बी.एड.,एम.कॉम,एमए.(समाजशास्त्र),एम.ए.(अंग्रेजी),प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद (प्रभाकर)
प्रकाशित: समाचार पत्र,सम्पादकीय,पत्रिकाएं और स्वंय रचित काव्य संग्रह की पुस्तक पूर्व प्रकाशित।

अबला की मुस्कान

मुस्कुराते ही सदा,
हर गम उसे पीने पड़े।
हर दर्द को देकर अदा,
होंठो को यूँ सीने पड़े।।

इतना सहा की क्या कहें-
ये शब्द भी तो कम ही है,
इस मौन में कंपित सी है,
आंखे तो उसकी नम ही है।

जो सब्र सा वह क्लेश है,
है सीमा इस सहन की भी,
अतृप्त मन परवश सा है।
जज्बात में खोई सी भी।।

इस चित्त में तिल-तिल घुले,
और अधर का खुलना विवशता।
अज्ञान को पल-पल धुले,
औऱ ग्रहण में भी अवशता।।

यह ग्लानि मन बन्धित सा भी,
निद्रित रहे चिर शांति सुख से।
सुन सके अबला न कुछ भी।
इस जगत के क्रूर मुख से।।

स्त्री का बुद्धत्व क्यों दफ्न

ऐ बुद्ध तू पुरुष था,
छोड़ चला सुप्त ही,
शिशु औऱ भार्या को।
ऐ बुद्ध तू होता स्त्री,
छोड़ पाता गृह कही ,
शिशु और पति को।।

ऐ बुद्ध तूने ज्ञान पाया,
मोक्ष पाया,यश भी पाया,
आत्मा को कर सका तू उन्नत,
पूछती मैं खुद से-
क्यों बुद्ध सिर्फ हो सकता -
तू पुरूष, क्यों न स्त्री?
जीने पाएगी वो बनकर बुद्ध फिर??
ये जगत जीने न देगा-
कुत्सित नजर,कटु बाणों से
होगी व्यथित,
बन गया तू बुद्ध तो ये न समझ-
स्त्री कई घुट घुट के मरती...
लांघ न पाती है चौखट-
छोड़ शिशु और पति को,
वो मर्यादा का उल्लंघन न करती।

तू बुद्ध न बन सोच तू सिद्ध है,
तू बस एक पुरूष।
वरना हर घर में कई स्त्री ,
बुद्ध सी बसती है।
बस दर्द ये वो तेरे जैसे ,
चौखट लांघ कहां निकलती है!!

*****

रचनाकार परिचय

गरिमा बाजपेई

* शिक्षा: स्नातक
* प्रकाशित कृतियां

१.अनूभूति वेदनाओं की

२. मन की सीरत

३- सूनी गोद

४- साहित्यनामा मासिक पत्रिका में रचनाएं, आयाम पत्रिका, युग हस्ताक्षर, कथा व्योम और आगार पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं, प्रशस्ति पत्र और सम्मान प्राप्त है | उत्तराखंड के अखबार में जागरूक लेख प्रकाशित |

* ईमेल :bajpai.garima10@gmail.com

स्थाई पता - पार्क स्ट्रीट, कोलकाता।

नन्ही परी

नन्ही परी है ये मेरी , इसे भी हवा में उड़ने दो
पंख फैला कर खुले आकाश को छूने दो।

हर गिद्ध की नजर से बचा के रखूं
हर गिरी सोच से इसे छुपा कर रखू
क्यूं हर दायरे में सदा ये ही जिये
इसे भी अपनी उमंगे पूरी करने दो

नन्ही परी है ये मेरी,इसे भी हवा में उड़ने दो
पंख फैला कर खुले आकाश को छूने दो।

हर नियमों से इसे बांध कर रखूं
बेटो को सदा खुली सोच में रखूं
क्यूं सिर्फ बेड़ियों में ये ही जिये
इसे भी अपना नाम रोशन करने दो

नन्ही परी है ये मेरी,इसे भी हवा में उड़ने दो
पंख फैला कर खुले आकाश को छूने दो

हर आवाज इसकी दबा कर रखूं
पुरूष का ही सदा अस्तित्व रखूं

क्यूं सदा अंधेरों में सिर्फ ये ही जिये
इसे भी तो अपनी बात रखने दो

नन्ही परी है ये मेरी,इसे भी हवा में उड़ने दो
पंख फैला कर, खुले आकाश को छूने दो।।

*****

सूनी गोद

सूनी गोद है तेरी तो क्या हुआ दोस्त
क्यूं किस्मत को अपनी कोसती है।

क्यूं औरत ही औरत की है आज भी दुश्मन
ताना मारने की उसकी फितरत नहीं बदलती है।

तेरी ममता सबसे खूबसूरत है दोस्त
क्यूंकि सबसे ज्यादा ममता की कद्र तू करती है।

दर्द समझ हर किसी का 'ज़मानें' तू भी
क्यूं तूझे हर किसी के दर्द पर हंसी आती है।

तू सबसे भाग्यवान है इस सृष्टि में दोस्त
क्यूंकि मासूमों को यहां दरिंदे भी नहीं छोड़ते है।

कोई रिश्ता साथ नहीं रहता जिंदगी भर
क्यूं एक रिश्ते के लिए जिंदगी बर्बाद करती हैं।

'जी' तू खुलकर खूबसूरत जिंदगी मेरे दोस्त
कई लोग तुझे आज भी दिल से चाहते हैं।

कई रिश्ते जुड़े हैं तुझसे आज भी मेरे दोस्त
'चल' हर रिश्ते को आबाद करके जीते हैं।।

रचनाकार परिचय

इरफ़ान हारिस

पिता श्री मंगली
शिक्षा आठवीं
पेशा प्राइवेट नौकरी
पता ग्राम फैज़नगर तहसील फरीदपुर जिला बरेली उत्तर प्रदेश
प्रकाशित रचनाएं
अर्थ व्यूज विकली न्यूज़ पेपर
देहलवी टाइम्स विकली न्यूज़ पेपर
आज की सियासत विकली न्यूज़ पेपर
मोबाइल नंबर -9911292454

अब कोई निर्भया ना होगी

नारी तुझको लड़ना है
बुरी नज़र के मर्दों से
बिल्कुल भी ना डरना है
बुरी नज़र के मर्दों से
भीड़ में मर्दों के संग
चलने का साहस करले
व्यभिचारी कमज़ोरों से
लड़ने की हिम्मत करले
नारीशक्ति को विजय करना है
बुरी नज़र के मर्दों से
महिलाओं के हाथों में हैं
तलवारें आभास करो
मर्द नपुंसक जाति का है
तो उसका विनाश करो
काल बनके अब लड़ना है
बुरी नज़र के मर्दों से
अपने मन में ठान लो अब
कोई निर्भया ना होगी
यदि कोई ये सोच भी ले
उसपे दया तो ना होगी
बस अंतिम निर्णय करना है
बुरी नज़र के मर्दों से

*****

मैं सांसे लेना चाहती हूं

रह रह कर हृदय में
ये अभिलाषा होती है
किसी रोज़ पिता से बोलूं
मैं भी जीना चाहती हूं
मैं सांसे लेना चाहती हूं
जो सुख का आभास कराएं
जिन पर रीतियों का पहरा ना हो
रिवाजो की धूल संलिप्त ना हो
किसी रोज़ भाई से बोलूं
मुझे देखने हैं वो दृश्य
जिन्हें तुम आकर रोज़
सुनाते हो माँ बाप को
जिनको सुनकर घर में
गूंजते हैं हंसी के
कह कह
फिर मैं भी
बेमन सा हंसती हूं

*****

रचनाकार परिचय

प्रीति शर्मा "मधु"

मेरा नाम प्रीति शर्मा "मधु" है। मैं गांव लद्दा, ज़िला बिलासपुर ,हिमाचल प्रदेश की रहने वाली हूं। मैं हिंदी और पहाड़ी कविताओं, शायरी और गीतों पर काम कर रही हूँ। मैं दुनिया और उसकी आंतरिक भावनाओं के बारे में अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए उद्धरण और कविता लिखती हूँ। और साथ में ही अभी मैं कुछ पुस्तकों में सह लेखिका के रूप में भी काम कर रही हूं। लिखना मेरा शौक है साथ में ही एक सही लेखन को लोगों तक पहुंचाना मुझे अच्छा लगता है।

अबला सबला नहीं, नारी सम्मान की अधिकारी

मैं नारी हूं सब पर भारी
कहता हर कोई
फिर ना जाने क्यों आजमाई जाती।

आज क्यों भूल गए महाभारत को
द्रोपदी के चीर हरण को
अंधे बन तब भी सब देख रहे थे
सह ना पाए इस अपमान को पांडव
धर्म को करने खंड-खंड
ले गए अधर्म को कुरुक्षेत्र तक
अंत जब हुआ
अधर्म पर धर्म का परचम लहरा उठा
युद्ध था बड़ा भयंकर
आज कलयुग में ना कोई इसका डर।

सड़क चौराहे पर नारी
क्यों लगती है अबला नारी
नज़रें काली हैं तुम्हारी
और फिर कहते हो घर से क्यों है आई।

सहती, चुप रहती
तब तक है संस्कारी

घर के काम ,बच्चे संभाले
तब तक नारी प्यारी ।
मांस का टुकड़ा समझ कर उसको
ना जाने कौन से बन जाते हैं व्यापारी ?

हां ,होगा युद्ध जब-जब उस पर घात होगा
मां सरस्वती से चंडी ,काली का अवतार होगा।
इतिहास गवाह है कि और प्रमाण चाहिए
उठा धूल पड़े पन्नों को, नारी को बस सम्मान चाहिए।

*****

आख़िर मुझे छुट्टी होगी कब

साल के 365 दिन
365 दिनों में 12 महीने ,
एक महीने में 4सप्ताह ,
एक सप्ताह में 7दिन ,
एक दिन में 24घंटे ,
एक घंटे में 60मिनट ,
एक मिनट में 60सेकेंड ,
आख़िर मुझे छुट्टी होगी कब।

सुबह शाम मैं घर की रानी
नाश्ता, लंच और डिनर की मैं मशीनरी
साफ़ सफाई मेरा जिम्मा
चाहे कार्यालय में काम करना पड़े कितना
भाग दौड़ में भागी जिन्दगी
रविवार की छुट्टी भी नहीं मिलेगी
फिर मुझे छुट्टी होगी कब।

मेरे शरीर को धीरे धीरे जव ने पकड़ लिया था
हाथों में भी मेरे जान न थी
और टांगों ने भी जवाब दे दिया था
समय संध्या काल का था
और घड़ी ने भी अपना अलार्म बजा दिया था
मेरे उनके घर आने का समय था

और मन दुविधा में था...
अब खाना कैसे बनाऊं
आख़िर मुझे छुट्टी होगी कब।

*****

रचनाकार परिचय

रश्मि अग्रवाल

जन्मतिथि - 04/12/1976
जन्मस्थान - उरई
माता /पिता का नाम : श्री नरेश चंद्र अग्रवाल
पति का नाम : श्री अमितेश अग्रवाल
शिक्षा - बी.एस.सी. (बायो ग्रुप), परास्नातक अंग्रेजी,प्राचीन इतिहास, बी.टी.सी.
कार्य - शिक्षिका (विज्ञान विषय) (बेसिक शिक्षा विभाग) बांदा
प्रकाशन - देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित।
पता - अमितेश अग्रवाल बन्योटा बांदा
संपर्क सूत्र -6387456667

नारी शक्ति की अद्वितीय कहानी

सृष्टि की उत्साहित रागिनी, नारी शक्ति की अद्वितीय कहानी।
स्वप्नों की ऊँचाईयों पर चलती, विश्व को रंगते सिखाने वाली।।

सूर्य की किरणों में चमकती, रात के अंधकारों को भगाती।
अपने सपनों को पूरा करती, जीवन की मिसाल बनाती।।

धरा पर बूंदें बरसाती, संगीत में रंगीनी ताल बजाती।
अपनी भूमिका में निभाती, समाज में बदलाव लाती।।

असीम आसमानों को छूती, विकास की ऊर्जा से भरपूर होती।
नारी शक्ति का रूप, अनूठा गाती, सबको एक साथ जोड़ती।।

*****

बेटी की ऊँची उड़ान

बेटी की मुस्कान में छुपा, सृष्टि का रहस्य अनुपम है।
आकाश से भी ऊँची उड़ान, बेटी की दुनिया विश्वासनीय है।

नन्हीं सी कोमलता से भरी, सपनों की राहों में बढ़ती।
मानवता के सागर में सागर, बेटी का अद्वितीय साकार है।

शिक्षा की बातें सिखाती, समाज को बदलने का सपना देखती।
बेटी बनी संवेदनशील सेनानी, विरासत की रक्षा करती।

बेटी का साथ, समृद्धि की ओर, जीवन की राह में दीपक की तरह रोशनी है।
समाज के हर कोने में बसी, बेटी की महिमा अनंत गूंथी है।

*****

रचनाकार परिचय

डॉ (प्रो.) उषा कुमारी

(स्त्री रोग विशेषज्ञा)

जन्मतिथि - 21 जनवरी 1966, जन्मस्थान- मोहिउद्दीनपुर,पटना
शिक्षा-एम.बी.बी. एस., डी.जी. ओ., एम.डी.,एस.आर.एफ.
(आई. सी. एम.आर, दिल्ली)।
पदस्थापना- प्रोफेसर (जीव रसायन विभाग), भगवान महावीर आयुर्विज्ञान संस्थान, पावापुरी, नालंदा , बिहार।
व्यवसाय- चिकित्सा , शिक्षा एवं शोध कार्य, लेखन कार्य।
पिता - श्री राम पदार्थ सिंह माता- स्वर्गीया राजकुमारी देवी
पति- डॉ. दिवाली प्रसाद, नेत्र रोग विशेषज्ञ।
प्रकाशन - इंकलाब पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित काव्य संकलन पुस्तक आओ चलें अनंत की ओर भाग-1 और भाग-2 एवं शीला की कहानी उपन्यास, प्रेम - अमृत साझा काव्य पुस्तक का संपादन एवं लगभग 60 से भी अधिक साझा काव्य संग्रह पुस्तकों में इनकी कविताओं को स्थान के अतिरिक्त तिरंगा पत्रिका के साथ-साथ अन्य पत्रिकाओं में भी इनकी रचनाओं को प्रकाशित किया गया है। कई साझा संकलन प्रकाशित।

तुम अदम्य- प्रकाश वाहिनी

तुम ही मेरी हो मोहिनी
तू ही हो वीणा वादिनी।
तुम मेरी प्राण प्रियतम हो
तू पुण्य-प्रकाश वाहिनी!

तुम ही मेरी अर्धांगिनी
तू ही हो कैलाश वासिनी
तुम मेरी आत्मा में रहती हो
तुम अमृत- प्रकाश वाहिनी।

तुम ही मेरी वीरांगना
तू दुर्ग विधान रचयिता
तू सभ्यता संरक्षण करती हो
तुम सत्य-प्रकाश वाहिनी।

तुम जगत जननी माता
तू सब की पालनहारिनी।
तू धरती की हरियाली हो
तुम हरित- प्रकाश वाहिनी।

तुम गंगा - यमुना कावेरी
तुम सरस्वती मेरी प्यारी।
तुम से ही जगत में जिंदगी
तुम अदम्य- प्रकाश वाहिनी।

कोहरा

सम्पूर्ण धरा पर कोहरा क्यूँ है?
मानव तू अपनों से दूर क्यों है??
जानते हुऐअकेले जीवन दूभर।
किस मरुस्थल की आसा में
भागते-भागते आज हुए बेहाल।

कलयुगी पथ कंटक से परिपूर्ण
प्रेम - रहित और जल- विहीन
रार भाई और बहनों के बीच
क्यों झूठी सी कल्पना में रहते?

थोड़े से ज्ञान के अभिमान
और क्षणिक धन की अकड़?
चेतना से दूर किसी जंगल में
अकेले ही पड़े रहते हो!

किसी के आंसू पोंछ न सके
प्रेम परिभाषा जान सके न।
रहते मदमस्त, मस्त कलंदर
विष-वांग से क्या लाभ हासिल?
रहते हो मगरूर क्या बात है
कि तुमने देखा नहीं सत्य।

सुनते रहे सदा किसी की बात
आत्मसात तुमने किया असत्य।
कैसी विडंबना और छलना?
कि प्यार दूर हो आज अतिदूर !
सम्पूर्ण धरा पर कोहरा क्यों है ?
मानव अपनों से दूर क्यों है?

*****

रचनाकार परिचय

इन्दु विवेक उदैनियाँ

जन्मतिथि -15.01.1985
माता का नाम -रमा शुक्ला
पिता का नाम -ब्रह्म प्रकाश शुक्ला
निवास -उरई जालौन उत्तर प्रदेश
शैक्षिक योग्यता -परास्नातक
रुचि के क्षेत्र- शिक्षण,समाजिक कार्य एवं साहित्य
व्यवसाय -शिक्षिका
उपलब्धियां - विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित अलग-अलग विषय की रचनाएं।
विभिन्न प्रदेशों से प्रदेशीय स्तर पर सम्मानित एवं जनपदीय स्तर पर विभिन्न मंचो द्वारा साहित्य के क्षेत्र में पुरुस्कृत। 11 सांझा काव्य संग्रहों में सहभागिता।

समय के साथ बदलती स्त्री

हर वो योषिता
खींची गई हर युग में,
जिसके लिए लक्ष्मण रेखाएं,
कभी मान के नाम पर,
कभी अपमान के नाम पर,
कभी सत्य के नाम पर,
कभी असत्य के नाम,
हर वो योषिता,
छली गई जो हर बार,
कभी रिश्तों के नाम पर,
कभी रिवाज़ो के नाम पर,
कभी द्वेष के नाम पर,
कभी प्रेम के नाम पर,
हर वो योषिता,
दूषित हुई जो हर बार,
समाज में फैले प्रदूषण से,
अपमान के खर दूषण से,
कटे फटे वस्त्रों से,
नजरों के अस्त्रों से,
हां हर वही योषिता,
जो आहत हुई है कई बार,
अपने ही अपनों से,
बेगाने सपनों से,
अग्नि की लपटों से,
डांट और डपटों से,
वही हर योषिता कर रही है प्रयास,
भेदने का लक्ष्य को,
पार कर लक्ष्मण रेखाएं,
हर छल हर भ्रामकता से परे,
समाज में फैले प्रदूषण को हटाने का,
स्वयं के बिना आहत हुए,
स्वाभिमान बचाने का,
स्वयं योषिता कहलाने का।

*****

प्रकृति हूँ मैं

हां करती हूं मैं बातें,
ये धरती ,अम्बर,से
ये फूल ,पत्तियोन,तितलियों से
क्योंकि मैं प्रकृति के,
समीप हूँ,,,,,
मैं करती हूं बातें,
नदियों से,हवाओ से,
फिजाओं से बहारों से,
क्योंकि मुझे पसंद है,
खुद की धुन में बहना,
मैं देखती हूँ देर तक,
पंक्षियों को उड़ते,
क्योंकि देते है ये,
मेरे जीवन को उद्देश्य,
सुबह का सूरज,
रात का चांद,
और छोटे छोटे तारे,
भरते है मुझमें चेतना,
रंग सभी लुभाते है मुझे,
क्या लाल क्या हरा,
क्योंकि हर रंग का होता
अपना अस्तित्व,

मुझे पसंद है कभी कभी,
अपने ईश्वर से बात करना,
अकेले में जो देता है मुझे,
बेहद सुकून,,,,,
और बनते है ये सब माध्यम,
मेरे सृजन के,
हां है मुझे प्रेम प्रकृति से,
हां प्रकृति हूँ मैं..........

*****

रचनाकार परिचय

अभिषेक नागर "सहज"

* पिता :श्री ब्रजेश जी नागर
* माता :श्री मती आशा देवी नागर
* शिक्षा: स्नात्तकोत्तर
* व्यवसाय: शिक्षक
* पत्राचार का पता: वार्ड 04छापीहेड़ा जिला राजगढ़
मध्य प्रदेश पिन - 465689
* प्रकाशित कृतियां: बदलते रंग (काव्य संग्रह), चंद्रयान (साझा काव्य)
* मोबाइल नं:- 9752450547
* ई-मेल: abhishek09nagar@gmail.com

उलझी-उलझी रहती हूं

सुनकर बात तुम्हारी माँ ,
सहमी सहमी रहती हूं।
बाहर अभी नहीं आई हूं,
उलझी-उलझी रहती हूं।

सुनी बात मैंने कानों से,
तुम्हें दिए बापू के तानों से,
मुन्ने की बस चाह उन्हें हैं,
मेरी ना परवाह उन्हें हैं।

बापू कहते मुन्ना होगा,
जश्न अब दुगना होगा।
तुम्हें बताऊं कैसे बापू,
सुनती हूं होकर बेकाबू।

पता चलेगा जब मैं आई,
कैंसे रह पायेंगी मांई।
क्या तानों को सह पाएंगी,
दर्द में कब-तक रह पाएंगी।

पता नहीं तो लाड़ लड़ाते,
पुत्र मोह में बस ललचाते।
देख नहीं सकते मुझको ,
वर्ना मेरा क्या हाल बनाते।

एक बात मुझे बतला दो,
दोष क्या मेरा समझा दो।
मुझे पता मैं हुं एक लड़की,
पर रचना हुं मैं रचनाकर की।

रचनाकर ने रचा हैं मुझको,
यह बात नहीं पता है तुझको।
मत चोटिल कर अरमानों को,
होता सहन नहीं कानों को।

*****

मन ही मन में रोती रहती

कितने दर्द हैं सीने में,
फिरभी होठो से मुस्का देती हों।

मन ही मन में रोती रहती,
चेहरा फिरभी खिला लेती हों।

कितने किरदार छिपे है तुम्मे,
माँ, बेटी, बहु, या हों पत्नि।

हर किरदार निभा लेती हों,
चेहरा फिर भी खिला लेती हों।

दुनिया में तुम जब से आई,
पिता ने ना देखी थी परछाई।

फिरभी बेटी का फर्ज निभा लेती हों,
चेहरा फिर भी खिला लेती हों।

छोड़ अपनों और अपने सपनो को,
किसी और का घर सजा देती हों।

अंदर से घुट- घुट कर चाहे रोती,
चेहरा फिरभी खिला लेती हों।

नो माह उदर में रख कर,
छाती से उसे लगा लेती हों।

इतना दर्द सहन करती हों,
चेहरा फिरभी खिला लेती हों।

सहन शीलता की मुरत हों,
करुणा की परिभाषा हों।

नारी तुम हो शक्ति की पूरक,
हर घर की अभिलाषा हों।

*****
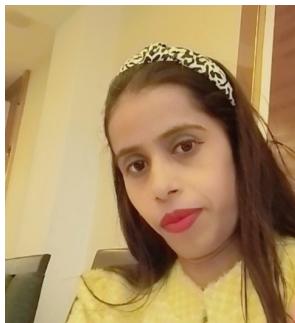
काजल यादव

जन्मतिथि:02/10/1994

जन्मस्थान: कानपुर नगर

माता - श्रीमती मंजू देवी

पिता: श्री रामपाल यादव

शिक्षा : स्नातक, परास्नातक, बी.टी.सी.(टेट, सीटेट)

रूचि : लेखन एवं पठन

पता :81, माधवपुरम आईआईटी सोसाइटी कानपुर नगर -208016

सम्पर्क सूत्र : 8318758336

नारी रूप

नारी एक ऐसी गुरु
जो शर्ट के टूटे बटन से
व्यक्ति के टूटे मन तक
सब जोड़ने का हुनर जाने
उसे विरह की वेदना लिखूं
या मिलन का संगीत
कोई बताये कैसे लिखूं??
थोड़े शब्दों में उसका जीवन गीत
कभी सीता कभी काली
कभी प्रेम करने वाली
कभी कोमल कभी कठोर
नारी बिन नर का ना कोई छोर
ऐसा कोई शब्द बना क्या??
जो कर सके उसे परिभाषित
नारी तो वो शक्ति है
जिसमें है दुनिया समाहित

*****

मैं नारी हूं मैं शक्ति हूँ

मैं नारी हूँ मैं शक्ति हूँ
शब्दों की वो वर्णमाला हूं
जो अक्षरों से ढाली जाती हूं
कितना कुछ समेट अपने भीतर
बस हर पल मुस्कुराये जाती हूं
आशा निराशा के झूले में
अक्सर झूला करती हूँ
कहाँ माँगा आकाश कभी
पग भर ज़मीन को तरसा करती हूं
मैं नारी हूं.....

जुबान का शिकवा हर कोई देता
मगर गूंगी से व्याह कोई ना करता
प्रीत में मैं राधा बनती
गृहस्थी में मैं जानकी
काली बनके शीश उतारू
जब बात हो मेरे सम्मान की
मैं नारी हूं.....

*****

रचनाकार परिचय

आशीष कुमार पाण्डेय

संप्रति बाल विकास परियोजना अधिकारी के पद पर उत्तर प्रदेश सरकार में कार्यरत हैं।

संपर्क सूत्र: ग्राम व पोस्ट सराय भारत उर्फ होलागढ़,जिला प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)-212503
मोबाईल नम्बर 9125307100, 9415273308

प्रकाशित साझा काव्य संग्रह:- 1.वर्ष 2022 में आसमान की ऊंचाई और आधुनिक साहित्यकार।
2.वर्ष 2023 में हिंदी भाषा के आधुनिक साहित्यकार एवम् उनकी रचनाएं,प्रेम पथिक,काव्यांजलि,पूनम की रात,प्रेम पुष्प और हिन्दी हैं हम ।
3.अर्द्ध वार्षिक पत्रिका पलाश,मासिक पत्रिका अमर संदेश एवं शब्द सागर में विभिन्न लेख।
विभिन्न सम्मान:- साहित्य सागर सम्मान 2023,देश प्रेम साहित्य सम्मान 2023,देव भूमि ज्ञान श्री सम्मान 2023,महर्षि पतंजलि स्मृति सम्मान 2023, मां शारदे सेवा सम्मान 2023,विश्व हिन्दी साहित्य सम्मान 2023,अंतर्राष्ट्रीय नारी चेतना सम्मान 2023, डॉ० भीमराव अंबेडकर राष्ट्र गौरव सम्मान 2023 और मणिरत्नम सम्मान 2024।

बेटी मेरा अभिमान है

घर के आंगन को महकाती है बेटियां,
पिता के सौभाग्य को जगाती है बेटियां।

बेटियां ही भाग्य का द्वार होती है,
बेटियां नहीं किसी पर भार होती है।

महक उठता है दो घर बेटियों के आने से,
वैभव के द्वार खुलते है पुत्री रत्न पाने से।

बेटियों की पायल जो आवाज करती है,
चहक उठता है हर कोना जैसे मधुमास बहती है।

घर में खुशहाली का पैमाना है बेटियां,
मां की प्रतिबिम्ब है कहता जमाना है बेटियां।

बेटियां ही शान है, मां बाप का आन है,
हर कदम पर हर क्षण,मेरा अभिमान हैं।

*****

निश्चल श्वेत सा....

तुम बनो निश्चल श्वेत सा इस हयात में,
बन दीप्ति आकाश में तुम ही तुम छा जाओ।

जीवन मे स्वच्छंद हो शिप्रा नदी की तरह,
डर,भय आदि विकारों को जीवन से भगाओ।

विश्वास हो खुद पर कि जिद से जीत लो,
सारे जहां में यश श्री शिवानी सा फैलाओ।

बन दुहिता आशीष की,आशीष बन गई तुम,
अभिश्री बन कीर्ति जग में ढेर सारी फैलाओ।

*****

रचनाकार परिचय

श्रीमती रम्भा शाह

श्रीमती रम्भा शाह w/o श्री हरीश चंद्र शाह

पिता का नाम- M.L Tamta

माता का नाम - श्रीमती बसंती देवी

जन्मतिथि- 1-अक्टूबर-1974

व्यवसाय- अध्यापिका पद (प्रधानाध्यापिका)

विद्यालय का नाम - राजकीय प्राथमिक विद्यालय मरोड़ा

शैक्षिक योग्यता- एम.ए भूगोल, एम.ए हिंदी, एम.ए शिक्षा शास्त्र,

डिप्लोमा- बी.टी.सी, बी.एड

प्रथम नियुक्ति-19/07/2002

मैं पहाड़ की नारी

हे पहाड़ की नारी, कभी हिम्मत ना हारी।
विपदा तुझे है भारी,फिर भी हिम्मत ना हारी।
ननद जिद्दी है सास रिसार,बारह माह काम बहार।
स्वामी प्रदेश बारह मास, आंसू कौन पहुंचाये उनके पास।

हे पहाड़ी की नारी, कभी हिम्मत नहीं हारी।
सुबह उठते ही काम-धाम, खेतों में रहना बारिश हो या घाम।
घनघोर जंगल में बाघ,भालू की डर, ये नारी है बिल्कुल निडर।

घास काटा कहलाई घस्यारी,कभी हिम्मत नहीं हारी।
मायके का लोभ लालच छोड़ा,पराये घर से रिस्ता जोड़ा।
बाप ने बड़े लाड़-प्यार से पाला,
घर की लाज रखना बोला।
हे पहाड़ की नारी,कभी हिम्मत ना हारी।

*****

बेटी का जीवन

बेटी का जीवन अनमोल,
इसका नहीं है कोई मोल!
बेटी होती है एक शान,
बेटी होती मान सम्मान!
सुनो एक बेटी की कहानी,
बेटी से बन गई बहुरानी!
फिर बेटी को मिला मां का मान,
फिर सास बनी मिला सम्मान!
बेटी ही एक नारी है,
जगत में सबसे प्यारी है!
बेटी है एक ऐसा पौधा,
जिसमें कई जड़े लगी है!
मां सास बहू है उनके नाम,
बेटी उसे पौधे का नाम।

*****

रचनाकार परिचय
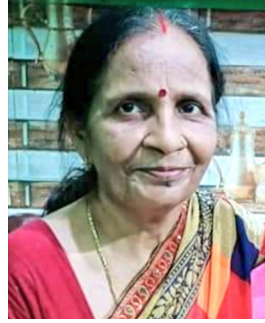
शशि बाला

जन्मतिथि - 24/12/1963

जन्मस्थान - ग्रा. व पो.- तीतरा खलीलपुर (जालौन)

माता /पिता का नाम : रानी - रामेश्वर दयाल निरंजन

पति का नाम : मोहन सिंह(अध्यापक)

शिक्षा - इंटरमीडिएट

कार्य - होम मेकर

रूचि- लेखन, गायन, वादन

पता - 2519,रामनगर झाँसी रोड,

कजारिया शोरूम उरई जालौन (उ. प्र.) पिन-285001

संपर्क सूत्र - 7905546601

मेरी माँ

मेरे जीवन का हर गीत जिनके लिए,

उन्हें प्यार से जग कहता है मां,

जीवन-दायिनी कहलाती है वो,

जीवन के हर सुख में समाई है वो,

छोटे बच्चों के लिए खुशनुमा पालना है वो,

रेत में तपते मन के लिए मीठी झील है वो,

देवी सम पूज्य और अतुलनीय है वो,

जलते हुए मन में गंगा सम शीतल है वो,

जाड़े की धूप सुनहरी सी है वो,

अंगना की माटी में तुलसी सी है वो,

अगर रूठ जाऊं तो पल भर में,

अपनी प्यारी मुस्कान से मना लेती है वो,

सब कुछ सहकर भी चुप रहती है वो,

बच्चों की खुशियों की खातिर दुनिया से लड़ती है वो,

हर रिश्ते में मिलावट देखी,

पर वह एक ही रिश्ता ऐसा,

जिसमें ना मिलावट देखी ना थकावट देखी,

वो रिश्ता है......माँ का रिश्ता,

मुझे दुनिया में लाने के लिए आभार,

"मेरी मां....... प्यारी मां"

मेरी चिड़िया

बनकर चिड़िया घर में आती है,
कुछ दिन का ही दाना पानी चुग पाती है,
फिर दुनिया के रश्मों -रिवाज से,
एक दिन अंगना छोड़ चली जाती है।
बन त्याग और समर्पण की मूरत,
नए नए बंधन और रिश्ते निभाती है,
जिस घर भी वो जाती है उजाला ही उजाला फैलाती है।
आंखों के सामने खिलाया जिसको,
पलकों पर सदा बिठाया जिसको,
विदा कर दूसरे अंगना भेजा जिसको,
क्या वह वहां इस तरह खुश रह पाती है?
शायद.......
पर सच तो यही है कि-
हां....उसको जीवन भर उसी अंगना की याद सताती है
पर वह अपनों की खातिर,
सब चुप रहकर सहती जाती है।
और जीवन पथ पर मुस्कुराहट बिखेरे,
चलती जाती है... चलती जाती है।

*****

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ।। मनुस्मृति ३/५६ ।

जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ स्त्रियों की पूजा नही होती है, उनका सम्मान नही होता है वहाँ किये गये समस्त अच्छे कर्म निष्फल हो जाते हैं।

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा ।। मनुस्मृति ३/५७ ।।

जिस कुल में स्त्रियाँ कष्ट भोगती हैं ,वह कुल शीघ्र ही नष्ट हो जाता है और जहाँ स्त्रियाँ प्रसन्न रहती है वह कुल सदैव फलता फूलता और समृद्ध रहता है । (परिवार की पुत्रियों, बधुओं, नवविवाहिताओं आदि जैसे निकट संबंधिनियों को 'जामि' कहा गया है ।)